'समानो मन्त्रः समितिः समानी'

UNIVERSITY OF NORTH BENGAL

B.A. Honours/General Part-III Examination, 2022

COMPULSORY HINDI

PAPER-HINM (MIL)

FOR ARTS

Time Allotted: 2 Hours | Full Marks: 50

The figures in the margin indicate full marks.

खंड-क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 5×5 = 25

(क) निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए संक्षेपेण कीजिए –

यह सोचना व्यर्थ है कि अपने हितों को प्राथमिकता देकर राष्ट्र का हित होगा। अपने हितों के लिए अनुचित साधनों से अपना सुधार करने से राष्ट्रीय चरित्र गिरेगा। राष्ट्रीय चरित्र प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र की समग्रता का नाम है। राष्ट्र सबके चरित्रवान् होने से ऊँचा होगा। प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र की समग्रता ही निर्मित करती है। कुछ एक लोगों के चरित्रवान् होने से ही राष्ट्र ऊँचा नहीं हो जाता।

(ख) भाव-पल्लवन कीजिए –

''बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय''

(ग) विज्ञप्ति की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

(घ) अपनी बहन को परीक्षा में असफल होने पर सांत्वना पत्र लिखिए।

(ङ) सड़कों की जर्जर दशा की जानकारी देते हुए सम्बन्धित अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

(च) निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पारिभाषिक शब्दावलियों के हिन्दी रूप लिखिए –

Awareness, Audit, Economic, Withdrawal, Clerk, Department, Payment.

खंड-ख

2. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए – 8×1 = 8

(क) तुलसीदास की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

(ख) 'निराला' की काव्य भाषा पर टिप्पणी लिखिए।

(ग) कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए – $8 \times 1 = 8$

(क) 'सोना' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'ठेस' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – 5

(क) रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न उपरहिं, मोती मानुष चून।।

अथवा

(ख) एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास।
एक राम घन स्याम हित चातक तुलसीदास।।

5. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – 4

(क) पशु मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं, यह सत्य मुझे सोना से अनायाज प्राप्त हो गया।

अथवा

(ख) कृष्णलाल की बूढ़ी माँ कहीं से चली आ रही थी, चौक के पास खड़ी मण्डली के पास से गुजरते हुए बोली ''वे जीणे जोगियो, इन्हाँ नूँ रोक देयो। इन्हाँ नूँ मना करो।''

——×——